



Mr.??? ???????????

16 Nov 1978

07:25 PM

Bhopal

Model: All-Dosha-Report

Order No: 120146401

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 16/11/1978
दिन _____: गुरुवार
जन्म समय _____: 19:25:00 घंटे
इष्ट _____: 32:06:07 घटी
स्थान _____: Bhopal
राज्य _____: Madhya Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 23:17:00 उत्तर
रेखांश _____: 77:28:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:20:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 19:04:52 घंटे
वेलान्तर _____: 00:15:19 घंटे
साम्पातिक काल _____: 22:46:00 घंटे
सूर्योदय _____: 06:34:33 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:35:06 घंटे
दिनमान _____: 11:00:34 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: हेमन्त
सूर्य के अंश _____: 00:17:39 वृश्चिक
लग्न के अंश _____: 29:13:49 वृष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: वृष - शुक्र
राशि-स्वामी _____: वृष - शुक्र
नक्षत्र-चरण _____: रोहिणी - 4
नक्षत्र स्वामी _____: चन्द्र
योग _____: शिव
करण _____: गर
गण _____: मनुष्य
योनि _____: सर्प
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: वैश्य
वश्य _____: चतुष्पाद
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: भूमि
जन्म नामाक्षर _____: वू-वुभेश
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: वृश्चिक

पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1900	कार्तिक	25
पंजाबी	संवत : 2035	मार्गशीर्ष	1
बंगाली	सन् : 1385	कार्तिक	30
तमिल	संवत : 2035	कार्तिकगई	1
केरल	कोल्लम : 1154	वृश्चिकम	1
नेपाली	संवत : 2035	मार्गशीर्ष	1
चैत्रादि	संवत : 2035	मार्गशीर्ष	कृष्ण 2
कार्तिकादि	संवत : 2035	कार्तिक	कृष्ण 2

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 2
 तिथि समाप्ति काल _____ : 26:45:49
 जन्म तिथि _____ : 2
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : रोहिणी
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 24:19:14 घंटे
 जन्म योग _____ : रोहिणी
 सूर्योदय कालीन योग _____ : शिव
 योग समाप्ति काल _____ : 29:22:13 घंटे
 जन्म योग _____ : शिव
 सूर्योदय कालीन करण _____ : तैत्ति
 करण समाप्ति काल _____ : 14:15:17 घंटे
 जन्म करण _____ : गर
 भयात _____ : 51:11:54
 भभोग _____ : 63:27:29
 भोग्य दशा काल _____ : चंद्र 1 वर्ष 10 मा 30 दि

घात चक्र

मास _____ : मार्गशीर्ष
 तिथि _____ : 5-10-15
 दिन _____ : शनिवार
 नक्षत्र _____ : हस्त
 योग _____ : शुक्ल
 करण _____ : शकुनि
 प्रहर _____ : 4
 वर्ग _____ : सिंह
 लग्न _____ : वृष
 सूर्य _____ : वृश्चिक
 चन्द्र _____ : कन्या
 मंगल _____ : धनु
 बुध _____ : कन्या
 गुरु _____ : मकर
 शुक्र _____ : मकर
 शनि _____ : तुला
 राहु _____ : मकर

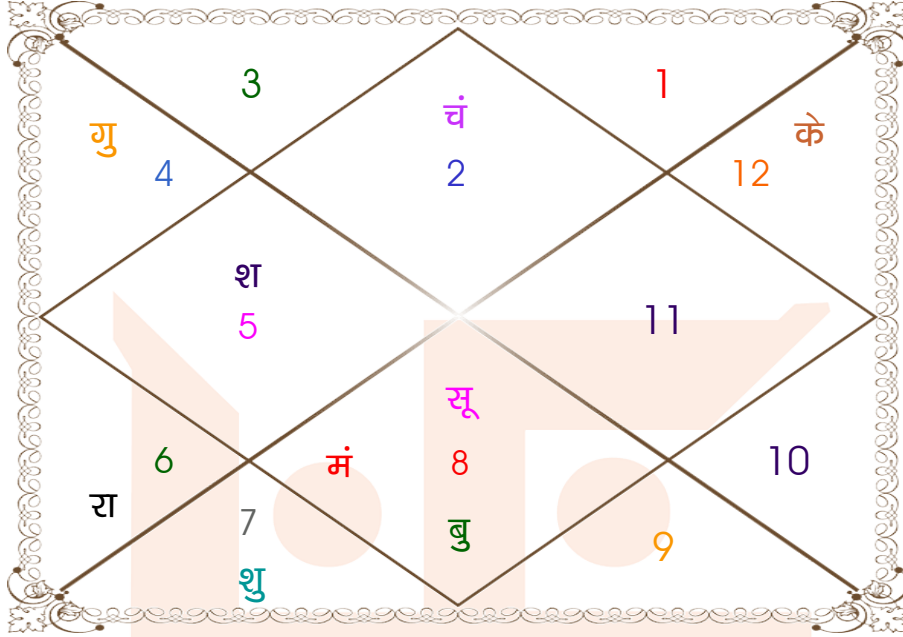


FUTUREPOINT
 Astro Solutions

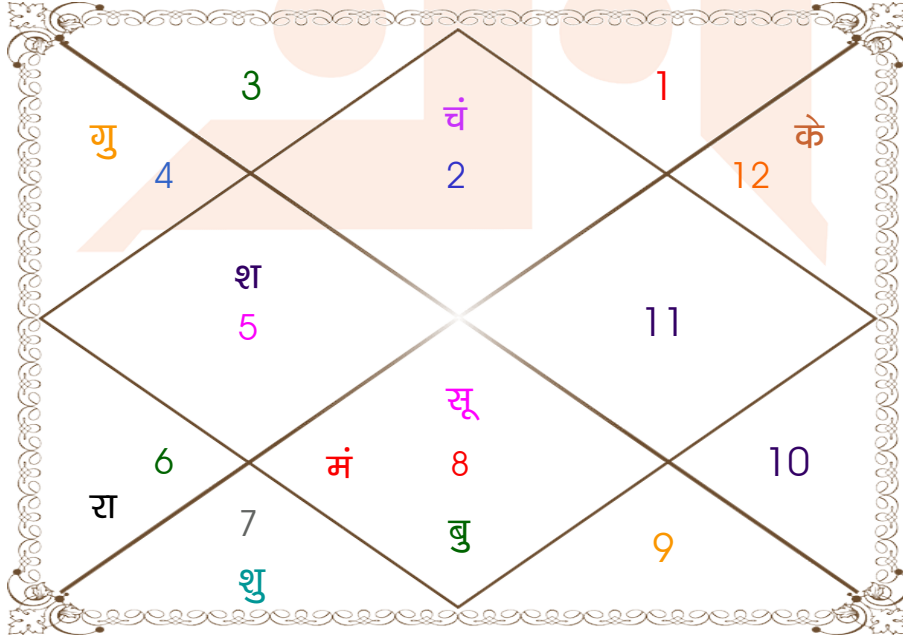


जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

के		चं ल	
			गु
			श
	बु सू मं	शु	रा

लग्न कुंडली

चं ल		के
	गु	
श		
रा	शु	सू मं बु

विंशोत्तरी
चन्द्र 1वर्ष 10मा 30दि
चन्द्र

16/11/1978

17/10/2090

चन्द्र	16/10/1980
मंगल	17/10/1987
राहु	17/10/2005
गुरु	17/10/2021
शनि	16/10/2040
बुध	17/10/2057
केतु	16/10/2064
शुक्र	16/10/2084
सूर्य	17/10/2090

योगिनी
सिद्धा 1वर्ष 4मा 3दि
पिंगला

21/03/2025

21/03/2027

पिंगला	30/04/2025
धान्या	30/06/2025
भामरी	19/09/2025
भद्रिका	30/12/2025
उल्का	30/04/2026
सिद्धा	19/09/2026
संकटा	01/03/2027
मंगला	21/03/2027



FUTUREPOINT
Astro Solutions



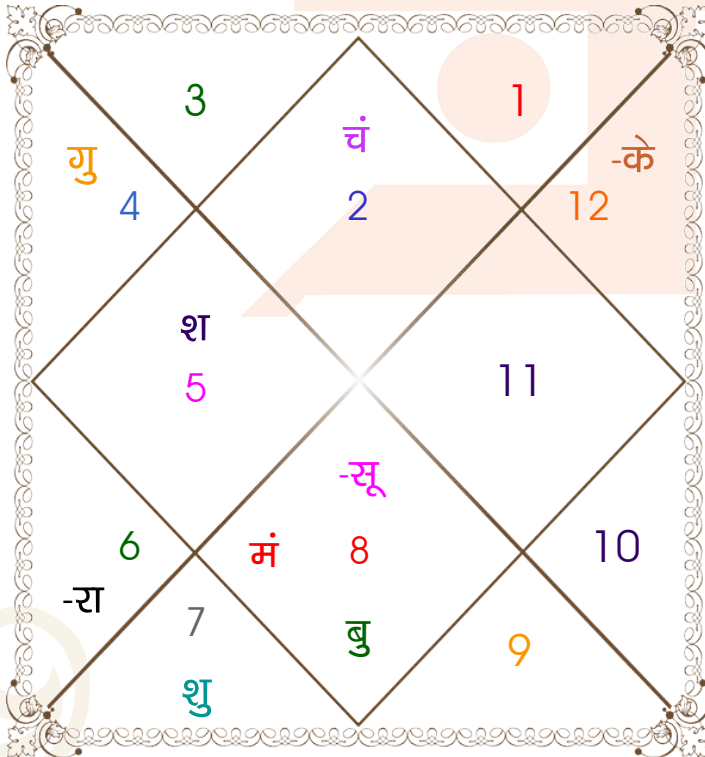
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	29:13:49	340:45:36	मृगशिरा	2	5	शुक्र	मंगल	शनि	---
सूर्य			वृश्चि	00:17:39	01:00:27	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	चंद्र	मित्र राशि
चंद्र			वृष	20:46:41	12:31:48	रोहिणी	4	4	शुक्र	चंद्र	शुक्र	मूलत्रिकोण
मंगल			वृश्चि	16:58:08	00:43:55	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	बुध	स्वराशि
बुध			वृश्चि	22:43:12	00:58:59	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	चंद्र	सम राशि
गुरु			कर्क	15:21:26	00:01:49	पुष्य	4	8	चंद्र	शनि	गुरु	उच्च राशि
शुक्र	व		तुला	16:41:00	00:28:06	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	शुक्र	मूलत्रिकोण
शनि			सिंह	19:03:44	00:03:59	पूर्वाफाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	राहु	शत्रु राशि
राहु	व		कन्या	01:23:53	00:11:07	उत्तराफाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	गुरु	मूलत्रिकोण
केतु	व		मीन	01:23:53	00:11:07	पूर्वाभाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	मूलत्रिकोण
हर्ष			तुला	23:36:06	00:03:44	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	शनि	---
नेप			वृश्चि	23:35:26	00:02:07	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	मंगल	---
प्लूटो			कन्या	24:26:28	00:02:01	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	राहु	---
दशम भाव			कुंभ	16:23:56	--	शतभिषा	--	24	शनि	राहु	शुक्र	--

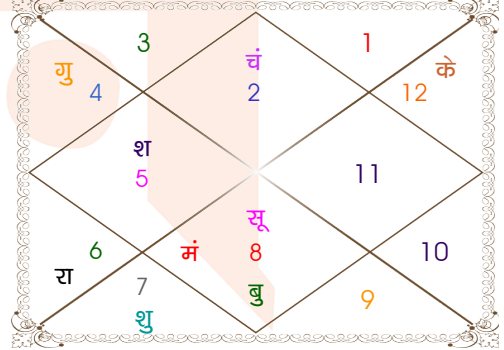
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:33:40

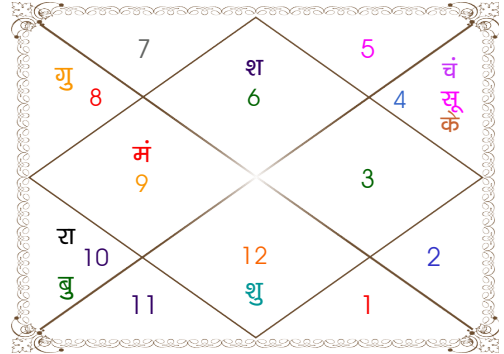
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	वृष 12:05:30	वृष 29:13:49
2	मिथुन 12:05:30	मिथुन 24:57:11
3	कर्क 07:48:52	कर्क 20:40:33
4	सिंह 03:32:15	सिंह 16:23:56
5	कन्या 03:32:15	कन्या 20:40:33
6	तुला 07:48:52	तुला 24:57:11
7	वृश्चिक 12:05:30	वृश्चिक 29:13:49
8	धनु 12:05:30	धनु 24:57:11
9	मकर 07:48:52	मकर 20:40:33
10	कुम्भ 03:32:15	कुम्भ 16:23:56
11	मीन 03:32:15	मीन 20:40:33
12	मेष 07:48:52	मेष 24:57:11

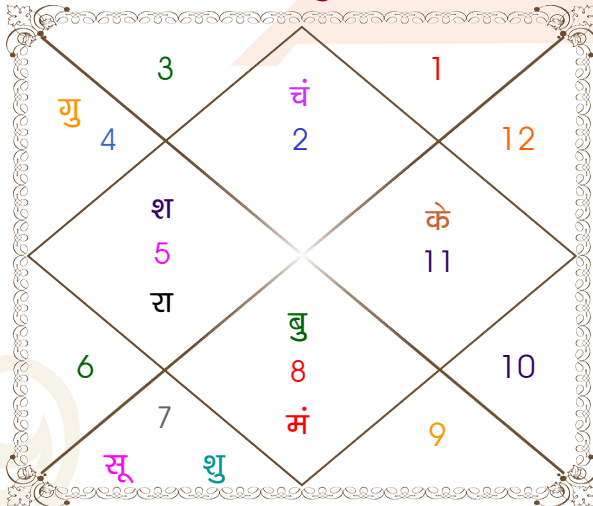
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृष 29:13:49	
2	मिथुन 23:19:04	
3	कर्क 18:02:39	
4	सिंह 16:23:56	
5	कन्या 19:45:31	
6	तुला 25:35:43	
7	वृश्चिक 29:13:49	
8	धनु 23:19:04	
9	मकर 18:02:39	
10	कुम्भ 16:23:56	
11	मीन 19:45:31	
12	मेष 25:35:43	

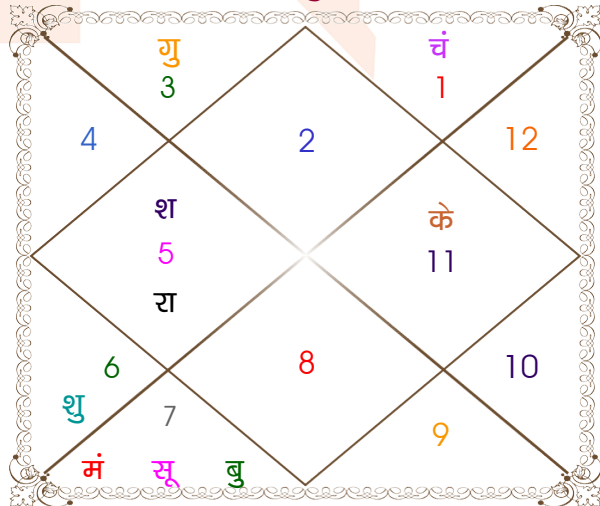
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



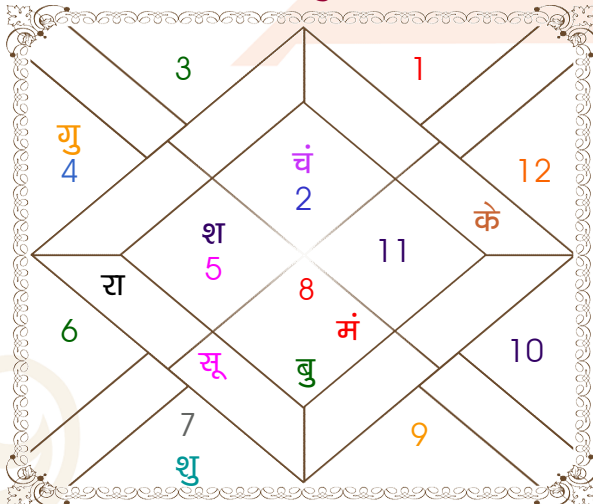
कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	----- कारक -----	----- अवस्था -----	
	चर	स्थिर	बालादि दीप्तादि शयनादि रश्मि ग्रह बल
सूर्य	कलत्र	पितृ	मृत मुदित आगमन 1.13 38 %
चंद्र	अमात्य	मातृ	कुमार स्वस्थ नृत्यलिप्सा 16.22 74 %
मंगल	मातृ	भातृ	युवा स्वस्थ उपवेशन 4.54 43 %
बुध	आत्मा	ज्ञाति	कुमार शान्त उपवेशन 1.56 38 %
गुरु	ज्ञाति	धन	युवा दीप्त नृत्यलिप्सा 19.79 61 %
शुक्र	पुत्र	कलत्र	युवा स्वस्थ उपवेशन 1.75 47 %
शनि	भातृ	आयु	वृद्ध खल आगम 3.31 59 %
राहु	---	ज्ञान	मृत स्वस्थ उपवेशन 0.00 12 %
केतु	---	मोक्ष	मृत स्वस्थ कौतुक 0.00 12 %
कुल			48.30

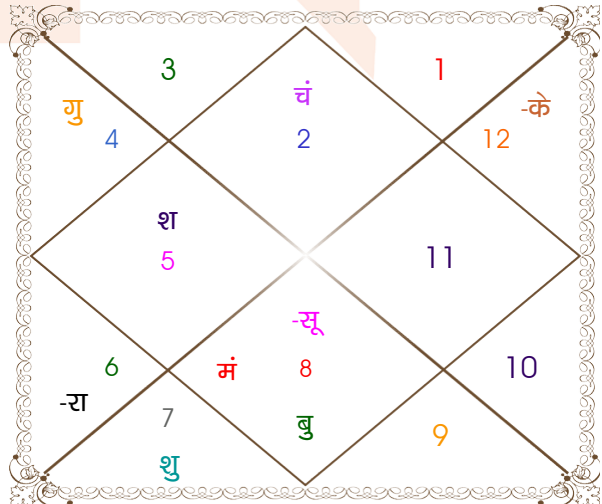
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका

चलित कुंडली



लग्न-चलित



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 1 वर्ष 10 मास 30 दिन

चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
16/11/1978	16/10/1980	17/10/1987	17/10/2005	17/10/2021
16/10/1980	17/10/1987	17/10/2005	17/10/2021	16/10/2040
00/00/0000	मंगल 14/03/1981	राहु 29/06/1990	गुरु 05/12/2007	शनि 19/10/2024
00/00/0000	राहु 02/04/1982	गुरु 22/11/1992	शनि 17/06/2010	बुध 29/06/2027
00/00/0000	गुरु 09/03/1983	शनि 29/09/1995	बुध 22/09/2012	केतु 07/08/2028
00/00/0000	शनि 17/04/1984	बुध 17/04/1998	केतु 29/08/2013	शुक्र 08/10/2031
00/00/0000	बुध 14/04/1985	केतु 06/05/1999	शुक्र 29/04/2016	सूर्य 19/09/2032
00/00/0000	केतु 10/09/1985	शुक्र 05/05/2002	सूर्य 15/02/2017	चंद्र 20/04/2034
16/11/1978	शुक्र 10/11/1986	सूर्य 30/03/2003	चंद्र 17/06/2018	मंगल 30/05/2035
शुक्र 17/04/1980	सूर्य 18/03/1987	चंद्र 28/09/2004	मंगल 24/05/2019	राहु 05/04/2038
सूर्य 16/10/1980	चंद्र 17/10/1987	मंगल 17/10/2005	राहु 17/10/2021	गुरु 16/10/2040

बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष
16/10/2040	17/10/2057	16/10/2064	16/10/2084	17/10/2090
17/10/2057	16/10/2064	16/10/2084	17/10/2090	00/00/0000
बुध 15/03/2043	केतु 15/03/2058	शुक्र 16/02/2068	सूर्य 03/02/2085	चंद्र 17/08/2091
केतु 11/03/2044	शुक्र 15/05/2059	सूर्य 15/02/2069	चंद्र 05/08/2085	मंगल 17/03/2092
शुक्र 10/01/2047	सूर्य 20/09/2059	चंद्र 17/10/2070	मंगल 10/12/2085	राहु 16/09/2093
सूर्य 17/11/2047	चंद्र 20/04/2060	मंगल 17/12/2071	राहु 04/11/2086	गुरु 16/01/2095
चंद्र 17/04/2049	मंगल 16/09/2060	राहु 17/12/2074	गुरु 23/08/2087	शनि 16/08/2096
मंगल 14/04/2050	राहु 04/10/2061	गुरु 17/08/2077	शनि 04/08/2088	बुध 16/01/2098
राहु 01/11/2052	गुरु 10/09/2062	शनि 16/10/2080	बुध 11/06/2089	केतु 17/08/2098
गुरु 06/02/2055	शनि 20/10/2063	बुध 17/08/2083	केतु 17/10/2089	शुक्र 16/11/2098
शनि 17/10/2057	बुध 16/10/2064	केतु 16/10/2084	शुक्र 17/10/2090	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 1 वर्ष 11 मा 5 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - बुध 19/10/2024 29/06/2027	शनि - केतु 29/06/2027 07/08/2028	शनि - शुक्र 07/08/2028 08/10/2031	शनि - सूर्य 08/10/2031 19/09/2032	शनि - चंद्र 19/09/2032 20/04/2034
बुध 08/03/2025 केतु 04/05/2025 शुक्र 15/10/2025 सूर्य 03/12/2025 चंद्र 23/02/2026 मंगल 21/04/2026 राहु 16/09/2026 गुरु 25/01/2027 शनि 29/06/2027	केतु 23/07/2027 शुक्र 29/09/2027 सूर्य 19/10/2027 चंद्र 22/11/2027 मंगल 15/12/2027 राहु 14/02/2028 गुरु 08/04/2028 शनि 11/06/2028 बुध 07/08/2028	शुक्र 16/02/2029 सूर्य 15/04/2029 चंद्र 20/07/2029 मंगल 26/09/2029 राहु 18/03/2030 गुरु 19/08/2030 शनि 19/02/2031 बुध 01/08/2031 केतु 08/10/2031	सूर्य 25/10/2031 चंद्र 23/11/2031 मंगल 13/12/2031 राहु 03/02/2032 गुरु 21/03/2032 शनि 15/05/2032 बुध 03/07/2032 केतु 23/07/2032 शुक्र 19/09/2032	चंद्र 06/11/2032 मंगल 10/12/2032 राहु 07/03/2033 गुरु 23/05/2033 शनि 22/08/2033 बुध 12/11/2033 केतु 16/12/2033 शुक्र 22/03/2034 सूर्य 20/04/2034
शनि - मंगल 20/04/2034 30/05/2035	शनि - राहु 30/05/2035 05/04/2038	शनि - गुरु 05/04/2038 16/10/2040	बुध - बुध 16/10/2040 15/03/2043	बुध - केतु 15/03/2043 11/03/2044
मंगल 14/05/2034 राहु 14/07/2034 गुरु 06/09/2034 शनि 09/11/2034 बुध 05/01/2035 केतु 29/01/2035 शुक्र 06/04/2035 सूर्य 26/04/2035 चंद्र 30/05/2035	राहु 02/11/2035 गुरु 20/03/2036 शनि 01/09/2036 बुध 26/01/2037 केतु 28/03/2037 शुक्र 18/09/2037 सूर्य 09/11/2037 चंद्र 03/02/2038 मंगल 05/04/2038	गुरु 06/08/2038 शनि 31/12/2038 बुध 11/05/2039 केतु 04/07/2039 शुक्र 05/12/2039 सूर्य 20/01/2040 चंद्र 07/04/2040 मंगल 31/05/2040 राहु 16/10/2040	बुध 18/02/2041 केतु 10/04/2041 शुक्र 04/09/2041 सूर्य 18/10/2041 चंद्र 30/12/2041 मंगल 19/02/2042 राहु 01/07/2042 गुरु 27/10/2042 शनि 15/03/2043	केतु 05/04/2043 शुक्र 04/06/2043 सूर्य 23/06/2043 चंद्र 23/07/2043 मंगल 13/08/2043 राहु 06/10/2043 गुरु 24/11/2043 शनि 20/01/2044 बुध 11/03/2044
बुध - शुक्र 11/03/2044 10/01/2047	बुध - सूर्य 10/01/2047 17/11/2047	बुध - चंद्र 17/11/2047 17/04/2049	बुध - मंगल 17/04/2049 14/04/2050	बुध - राहु 14/04/2050 01/11/2052
शुक्र 31/08/2044 सूर्य 21/10/2044 चंद्र 16/01/2045 मंगल 17/03/2045 राहु 19/08/2045 गुरु 04/01/2046 शनि 17/06/2046 बुध 11/11/2046 केतु 10/01/2047	सूर्य 26/01/2047 चंद्र 20/02/2047 मंगल 11/03/2047 राहु 26/04/2047 गुरु 07/06/2047 शनि 26/07/2047 बुध 08/09/2047 केतु 26/09/2047 शुक्र 17/11/2047	चंद्र 30/12/2047 मंगल 29/01/2048 राहु 15/04/2048 गुरु 23/06/2048 शनि 13/09/2048 बुध 26/11/2048 केतु 26/12/2048 शुक्र 22/03/2049 सूर्य 17/04/2049	मंगल 08/05/2049 राहु 01/07/2049 गुरु 19/08/2049 शनि 15/10/2049 बुध 05/12/2049 केतु 26/12/2049 शुक्र 25/02/2050 सूर्य 15/03/2050 चंद्र 14/04/2050	राहु 01/09/2050 गुरु 03/01/2051 शनि 31/05/2051 बुध 09/10/2051 केतु 03/12/2051 शुक्र 06/05/2052 सूर्य 22/06/2052 चंद्र 07/09/2052 मंगल 01/11/2052

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - गुरु 01/11/2052 06/02/2055	बुध - शनि 06/02/2055 17/10/2057	केतु - केतु 17/10/2057 15/03/2058	केतु - शुक्र 15/03/2058 15/05/2059	केतु - सूर्य 15/05/2059 20/09/2059
गुरु 19/02/2053 शनि 30/06/2053 बुध 25/10/2053 केतु 13/12/2053 शुक्र 30/04/2054 सूर्य 10/06/2054 चंद्र 18/08/2054 मंगल 05/10/2054 राहु 06/02/2055	शनि 12/07/2055 बुध 28/11/2055 केतु 25/01/2056 शुक्र 07/07/2056 सूर्य 25/08/2056 चंद्र 15/11/2056 मंगल 11/01/2057 राहु 07/06/2057 गुरु 17/10/2057	केतु 25/10/2057 शुक्र 19/11/2057 सूर्य 27/11/2057 चंद्र 09/12/2057 मंगल 18/12/2057 राहु 09/01/2058 गुरु 29/01/2058 शनि 22/02/2058 बुध 15/03/2058	शुक्र 25/05/2058 सूर्य 15/06/2058 चंद्र 21/07/2058 मंगल 14/08/2058 राहु 17/10/2058 गुरु 13/12/2058 शनि 19/02/2059 बुध 20/04/2059 केतु 15/05/2059	सूर्य 21/05/2059 चंद्र 01/06/2059 मंगल 08/06/2059 राहु 28/06/2059 गुरु 15/07/2059 शनि 04/08/2059 बुध 22/08/2059 केतु 29/08/2059 शुक्र 20/09/2059
केतु - चंद्र 20/09/2059 20/04/2060	केतु - मंगल 20/04/2060 16/09/2060	केतु - राहु 16/09/2060 04/10/2061	केतु - गुरु 04/10/2061 10/09/2062	केतु - शनि 10/09/2062 20/10/2063
चंद्र 07/10/2059 मंगल 20/10/2059 राहु 21/11/2059 गुरु 19/12/2059 शनि 22/01/2060 बुध 21/02/2060 केतु 05/03/2060 शुक्र 09/04/2060 सूर्य 20/04/2060	मंगल 28/04/2060 राहु 21/05/2060 गुरु 10/06/2060 शनि 03/07/2060 बुध 24/07/2060 केतु 02/08/2060 शुक्र 27/08/2060 सूर्य 03/09/2060 चंद्र 16/09/2060	राहु 12/11/2060 गुरु 03/01/2061 शनि 04/03/2061 बुध 28/04/2061 केतु 20/05/2061 शुक्र 23/07/2061 सूर्य 11/08/2061 चंद्र 12/09/2061 मंगल 04/10/2061	गुरु 19/11/2061 शनि 12/01/2062 बुध 01/03/2062 केतु 21/03/2062 शुक्र 17/05/2062 सूर्य 03/06/2062 चंद्र 01/07/2062 मंगल 21/07/2062 राहु 10/09/2062	शनि 13/11/2062 बुध 10/01/2063 केतु 02/02/2063 शुक्र 11/04/2063 सूर्य 01/05/2063 चंद्र 04/06/2063 मंगल 27/06/2063 राहु 27/08/2063 गुरु 20/10/2063
केतु - बुध 20/10/2063 16/10/2064	शुक्र - शुक्र 16/10/2064 16/02/2068	शुक्र - सूर्य 16/02/2068 15/02/2069	शुक्र - चंद्र 15/02/2069 17/10/2070	शुक्र - मंगल 17/10/2070 17/12/2071
बुध 10/12/2063 केतु 01/01/2064 शुक्र 01/03/2064 सूर्य 19/03/2064 चंद्र 18/04/2064 मंगल 09/05/2064 राहु 03/07/2064 गुरु 20/08/2064 शनि 16/10/2064	शुक्र 07/05/2065 सूर्य 07/07/2065 चंद्र 17/10/2065 मंगल 27/12/2065 राहु 27/06/2066 गुरु 07/12/2066 शनि 17/06/2067 बुध 07/12/2067 केतु 16/02/2068	सूर्य 05/03/2068 चंद्र 05/04/2068 मंगल 26/04/2068 राहु 20/06/2068 गुरु 07/08/2068 शनि 04/10/2068 बुध 25/11/2068 केतु 16/12/2068 शुक्र 15/02/2069	चंद्र 07/04/2069 मंगल 12/05/2069 राहु 12/08/2069 गुरु 01/11/2069 शनि 05/02/2070 बुध 02/05/2070 केतु 07/06/2070 शुक्र 16/09/2070 सूर्य 17/10/2070	मंगल 11/11/2070 राहु 14/01/2071 गुरु 11/03/2071 शनि 18/05/2071 बुध 17/07/2071 केतु 11/08/2071 शुक्र 21/10/2071 सूर्य 11/11/2071 चंद्र 17/12/2071

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

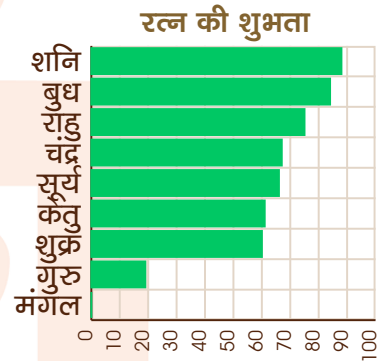
मूलांक	7
भाग्यांक	7
मित्र अंक	2, 3, 6, 7
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	मकर, कुम्भ
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	विष्णु
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	88%	सुख, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
पन्ना	बुध	84%	दम्पति, धन, सन्तति सुख
गोमेद	राहु	75%	सन्तति सुख, दम्पति
मोती	चंद्र	67%	स्वास्थ्य, पराक्रम
माणिक्य	सूर्य	66%	दम्पति, सुख
लहसुनिया	केतु	61%	धनार्जन, पराक्रम
हीरा	शुक्र	60%	शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
पुखराज	गुरु	19%	पराक्रम हानि, दुर्घटना, हानि
मूंगा	मंगल	0%	दाम्पत्य कष्ट, व्यय



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
चंद्र	16/10/1980	72%	80%	0%	91%	19%	60%	88%	63%	47%
मंगल	17/10/1987	72%	74%	18%	72%	31%	60%	88%	63%	67%
राहु	17/10/2005	53%	55%	0%	84%	19%	66%	94%	88%	47%
गुरु	17/10/2021	72%	74%	6%	72%	44%	44%	88%	75%	61%
शनि	16/10/2040	53%	55%	0%	91%	19%	66%	100%	82%	47%
बुध	17/10/2057	72%	55%	0%	97%	19%	66%	88%	75%	61%
केतु	16/10/2064	53%	55%	6%	84%	19%	66%	75%	63%	74%
शुक्र	16/10/2084	53%	55%	0%	91%	19%	72%	94%	82%	67%
सूर्य	17/10/2090	78%	74%	6%	84%	31%	44%	75%	63%	47%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	16/11/1978-04/11/1979 15/03/1980-27/07/1980	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	17/12/1987-21/03/1990 20/06/1990-15/12/1990	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005	-----

द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----

तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया

फल

अशुभ
अशुभ
अशुभ
शुभ
सम

क्षेत्र

सुख हानि
दुर्घटना से बचाव
व्यय
स्वास्थ्य
धन



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति सप्तम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं चूंकि आपका मांगलिक दोष भंग नहीं हो रहा है। अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। साथ ही स्वभाव से ही उनमें उग्रता रहेगी। यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं लेकिन यह अल्प समय के लिए होगा तथा दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही आप भी यदा कदा पित या गर्मी आदि से परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं। मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह कार्य में विलम्ब होने की संभावना रहेगी तथा विवाह से पूर्व वार्ताओं में भी गतिरोध रहेगा लेकिन अंत में आप को सफलता अवश्य प्राप्त होगी तथा सामान्य रूप से दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

सप्तम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जन्म दोषों से आपको परेशानी हो सकती है। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप परिश्रम एवं पराक्रम से इच्छित सफलता अर्जित करेंगे। समाज से भी न्यूनाधिक मान सम्मान की प्राप्ति होती रहेगी। लग्न पर दृष्टि के प्रभाव से स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा। यदा कदा मानसिक अशान्ति की भी अनुभूति हो सकती है। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद उत्पन्न होंगे जिससे परिवार की शान्ति प्रभावित होगी लेकिन इसका दुष्प्रभाव अल्प मात्रा में ही रहेगा।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं सम्पन्न बनाने के लिए आपको किसी ऐसे मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम,

अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इससे आपके सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी तथा सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा। आपसी संबंधों में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है ।
- लग्नेश षष्ठ भाव में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुंडली में चन्द्र और शुक्र के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुंडली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें ।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें । 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें ।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली वृष लग्न की हैं। वृषभ लग्न आपको आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी बना रहा हैं। स्थिर लग्न होने से इनका स्वभाव स्थिरता लिये हुए होता है। आप जो भी कार्य करते हैं उसे पूरा करके ही हटते हैं। राशि चिह्न बैल होने की वजह से आप अत्यंत मेहनती हैं तथा लगातार कार्य करते रहना आपका व्यवहार हैं। प्यार से आप कुछ भी कर सकते हैं लेकिन जबरदस्ती करने पर आप बैल की भाँति अड़ियल हो जाते हैं, उस स्थिति में आपसे कुछ भी कराना मुश्किल होता है। पृथ्वी तत्व राशि होने से सहनशीलता का भाव आपमें कूट-कूट कर भरा है। जब तक आपसे सहन होता है, आप करते जाते हैं। योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना आपको पसंद होता है। हर वस्तु को नियत स्थान पर रखना, हाथ में लिया गया प्रत्येक कार्य

पूर्ण करना, प्रत्येक सुन्दर वस्तु की ओर आप आसानी से आकर्षित हो जाते हैं।

त्रिक भावों के स्वामी अपने स्वामित्व के आधार पर स्वयं में अशुभता लिए होते हैं। 6,8,12 भावों को त्रिक भाव के नाम से जाना जाता है। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

वृषभ लग्न में छठे भाव व लग्न भाव के स्वामी शुक्र हैं, शुक्र षष्ठेश होने पर स्वास्थ्य, ऋण के पक्ष से शुभ नहीं हैं। जीवन में प्रगति की राहों में बाधक बनता है। सतत प्रयासों के उपरान्त आप बाधाएं समाप्त करने में सफल रहेंगे।

अष्टम व एकादश भाव के गुरु हैं। इस भाव में बृहस्पति की स्व और मूल त्रिकोण धनु राशि हैं। बृहस्पति की राशि बाधक और गुप्त विषयों से सम्बंधित भाव में होना, आपको आर्थिक, वित्तीय और प्रबंधकीय विषयों में छोटी, धोखा और अप्रत्याशित हानि दे सकती हैं। जीवन की घटनाओं में शुभता के पक्ष से गुरु की धनु राशि इस भाव में आपके पक्ष में शुभ फल नहीं दे रही हैं।

द्वादश व सप्तम भाव के मंगल हैं। वृषभ लग्न के लिए मंगल विशेष अशुभ ग्रह होते हैं। आपके लग्न में मंगल की एक राशि सप्तम भाव तथा दूसरी द्वादश भाव में आती हैं। द्वादश भाव में मंगल की राशि मंगल के कारक तत्वों में कमी करती हैं। सप्तमेश मंगल दुर्घटनाओं, शल्यचिकित्सा, लड़ाई-झगड़ों के योग बना कर ऊर्जा शक्ति की हानि करा सकता है।

शुक्र की स्थिति छठे भाव में आपको शत्रु विजयी बना रहा है, मामा का सुख, द्विभार्या योग, दाम्पत्य जीवन कष्टप्रद, अंतरजातीय विवाह की संभावनाएं देता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 3, 5, 6 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती है।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। वृष लग्न में उत्पन्न जातक सामान्यतया धैर्यवान एवं सहिष्णु होते हैं तथा उनकी वाणी में भी मधुरता का भाव रहता है। उनका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहता है तथा परिश्रम करने की उनमें अपूर्व क्षमता होती है। इसी परिश्रम के द्वारा वे जीवन में सफलता अर्जित करते हैं तथा समस्त भौतिक सुखों को प्राप्त करके आनंद पूर्वक उनका उपभोग करते हैं। स्वभाव से ये जातक प्रायः शांति प्रिय होते हैं परन्तु साहस एवं पराक्रम से युक्त होकर अपने सांसारिक कार्यों को सिद्ध करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप प्रायः सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे। आपकी वाणी मधुर होगी तथा अन्य जनों को स्ववाक्चातुर्य से प्रभावित करने में समर्थ होंगे। आपका शारीरिक कद मध्यम होगा तथा स्वभाव में उदारता एवं सहिष्णुता का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही आप अनावश्यक क्रोध एवं चंचलता की नित्य उपेक्षा करेंगे फलतः आपके सांसारिक महत्व के कार्य यथा समय सिद्ध होंगे जिससे समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा लोग आपसे प्रभावित रहेंगे।

आप एक परिश्रमी पुरुष होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। अपने सदगुणों के द्वारा आप अपने श्रेष्ठ जनों को प्रसन्न करने में सफल होंगे। आप एक विद्वान पुरुष होंगे तथा कला एवं साहित्य के प्रति आपके मन में रुचि रहेगी तथा परिश्रम पूर्वक इस क्षेत्र में सफलता एवं प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे। साथ ही जीवन में समस्त सुखैश्वर्य एवं वैभव को अर्जित करके आनंद पूर्वक इसका उपभोग करेंगे।

लग्न में चन्द्रमा की स्थिति के प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा तथा सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे। शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे एवं उत्साह तथा परिश्रम पूर्वक सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगे। इससे आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे तथा समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा तथा यश में अभिवृद्धि होगी। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति भी होंगे तथा अपने कार्यों को बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करेंगे।

आपका स्वभाव शांत तथा उदार होगा तथा अवसरानुकूल अन्य जनों की सुख दुख में सेवा तथा सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। धर्म के प्रति भी आपकी आस्था रहेगी तथा श्रद्धा पूर्वक समय समय पर धार्मिक अनुष्ठानों तथा कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे। जीवन में स्वपराक्रम परिश्रम एवं योग्यता से आप इच्छित धनैश्वर्य तथा वैभव अर्जित करेंगे एवं अन्य भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करके प्रसन्नता पूर्वक उनका उपभोग करेंगे। संगीत के प्रति भी आपके मन में रुचि रहेगी तथा कला एवं संगीत के क्षेत्र में आप इच्छित उन्नति तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

इस प्रकार आप स्वस्थ, देखने में आकर्षक, पराक्रमी तथा उत्साही व्यक्ति होंगे तथा कुशलतापूर्वक अपने सांसारिक कार्यकलापों को सम्पन्न करके आनंदपूर्वक अपना समय व्यतीत

करेंगे ।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप की प्रवृत्ति धनसंग्रह करने की रहेगी तथा वर्तमान एवं भविष्य के लिए प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करके उसका संग्रह करेंगे इससे आपकी आर्थिक स्थिति सन्तुलित रहेगी। साथ ही जायदाद या स्वर्ण आदि धातुओं पर पूंजीनिवेश करेंगे तथा इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ प्राप्त होगा। आपका पारिवारिक जीवन सुख एवं शान्ति से युक्त रहेगा तथा उनकी खुशहाली के लिए आप सदैव प्रयत्नशील रहेंगे तथा पारिवारिक जनों से आपको पूर्ण सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा।

सामान्यतया आपको सभी स्वाद रुचिकर लगेंगे परन्तु मिष्ठान के प्रति विशेष रुचिशीलता का प्रदर्शन करेंगे। चूंकि यह भाव वाणी का प्रतिनिधित्व करता है तथा इसका स्वामी बुध होने के कारण आपकी वाणी मृदु तथा प्रभाव शाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही विचारों की अभिव्यक्ति भी कुशलता पूर्वक करेंगे परन्तु अवसरानुकूल आप अपने विचारों में परिवर्तन भी कर सकते हैं। यदि आप यह अनुभव करते हैं कि इस समय के लिए यह विचार ठीक नहीं है। आतिथ्य सत्कार की भावना भी आपके मन में विद्यमान रहेगी। इसके अतिरिक्त स्त्री वर्ग से आपको उचित लाभ समय समय पर मिलता रहेगा तथा वाहन एवं बहुमूल्य रत्नों की भी प्राप्ति होगी। इसके साथ ही धार्मिक एवं सज्जन प्रवृत्ति के लोगों से आप सामान्यतया मित्रता करना पसन्द करेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थभाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है तथा शनि भी योगकारक ग्रह होकर केन्द्र-स्थान चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से जीवन में आपको इच्छित मात्रा में सुख-संसाधनों एवं धनसम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करने में समर्थ होंगे फलतः स्वपराक्रम से भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करके सन्तुष्टि प्राप्त करेंगे जिससे जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा तथा समाज में भी मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में आपको चल एवं अचल सम्पत्ति की अवश्य प्राप्ति होगी परंतु इनका उपभोग आप सुखपूर्वक युवावस्था के बाद ही करेंगे। साथ ही आपको वृद्धजनों से भी कुछ अचल सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। मध्यावस्था के बाद आप स्वपराक्रम परिश्रम एवं बुद्धिमता से प्रचुर मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति को अर्जित करने में समर्थ होंगे। इससे आपकी समृद्धि में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आप के वैभव एवं धनाढ्यता से प्रभावित होंगे।

जीवन में आपको उत्तम गृह की प्राप्ति होगी तथा सुखपूर्वक उसमें निवास करेंगे। आधुनिक भौतिक उपकरणों से यह सुसज्जित होगा एवं आप व्यक्तिगत रूप से भी इसकी साज-सज्जा एवं सफाई आदि का विशेष ध्यान रखेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित होंगे परंतु संबंधों में विशेष मधुरता नहीं होगी। इसके अतिरिक्त वाहन आदि से भी आप युक्त होंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे जिससे जीवन में सरसता बनी रहेगी।

आपकी माता शिक्षित बुद्धिमान एवं तेजस्वी प्रवृत्ति की महिला होगी तथा परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा। वह सभी लोगों का पूर्ण ध्यान रखेगी परंतु यदा-कदा उनकी तेजस्विता से अन्य पारिवारिक जन परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं लेकिन यह अल्पकालिक होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष अपनत्व एवं वात्सल्य का भाव होगा तथा अवसरानुकूल उनसे आपको नैतिक एवं आर्थिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आप भी सुख-दुख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा किसी भी प्रकार से अपनी ओर से कोई कष्ट नहीं होने देंगे। लेकिन यदा-कदा आपसी संबंधों में किंचित मतभेद हो सकते हैं लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा।

आप एक परिश्रमी एवं बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने इन्हीं गुणों से अध्ययन में तत्पर होंगे फलतः प्रारंभिक कक्षाओं में ही अच्छे अंको से सफलता मिलेगी। अतः स्नातक परीक्षा को आप अच्छे अंको से पास करेंगे। यदि आप किसी तकनीकी क्षेत्र से डिग्री आदि के लिए प्रयत्न करें तो इस क्षेत्र में आपको इच्छित सफलता मिलेगी एवं आपके मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा अन्य सामाजिक जनों से सम्मान एवं सहयोग प्राप्त करेंगे जिससे जीवन में उन्नति करने की प्रेरणा प्राप्त होगी।

सिंह राशि में शनि के प्रभाव से मध्यावस्था के बाद आपको रक्त चाप संबंधी

परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है तथा हृदय संबंधी कष्ट भी हो सकता है। अतः यदि आप युवावस्था से ही खान-पान का ध्यान रखें तो इस से आपको काफी मात्रा में आराम मिलेगा तथा भविष्य में आप सुरक्षित होंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा राहु भी कन्या राशि में ही पंचमभाव में ही स्थित है। ज्यौतिष में कन्या राशि राहु की स्वराशि मानी जाती है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा जीवन में अपने समस्त कार्य कलापों को बुद्धिमता से ही सम्पन्न करेंगे। इससे अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे। वैदिक एवं धर्मशास्त्रों के अध्ययन में अल्प रुचि होगी परंतु अधुनिक साहित्य एवं विज्ञान के क्षेत्र में आपकी पूर्ण रुचि होगी तथा परिश्रम पूर्वक इसमें ज्ञानार्जन करेंगे तथा पाश्चात्य साहित्य में भी आपकी रुचि होगी तथा इस क्षेत्र में आप ज्ञानार्जन के लिए विशेष प्रवृत्त होंगे। अतः समाज में एक विद्वान व्यक्ति के रूप में आपकी ख्याति एवं प्रतिष्ठा रहेगी।

राहु की पंचमभाव में स्थिति के फलस्वरूप प्रेम प्रसंगों में आपकी काफी रुचि होगी तथा कई बार आप इसे आत्म संतुष्टि या मनोरंजन के रूप में भी प्रयुक्त कर सकते हैं। यदा कदा प्रेम प्रसंगों के क्षेत्रों में आप आदर्श एवं मर्यादा का भी उल्लंघन कर सकते हैं। इससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना भी करना पड़ सकता है एवं मानसिक अशान्ति भी उत्पन्न हो सकती है। अतः ऐसी स्थितियों की आपको यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

स्वगृही राहु की पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा एक पुत्र भी अवश्य होगा। कन्याओं की संख्या पुत्र की अपेक्षा अधिक हो सकती है। आपकी संतति बुद्धिमान एवं गुणवान होगी तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से वे उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। माता पिता के प्रति यद्यपि उनके मन में श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी तथा आज्ञापालन में भी तत्पर होंगे परंतु यदा कदा वे अपनी मनमानी भी अवश्य करेंगे लेकिन इसकी आपको अधिक चिंता नहीं करनी चाहिए क्योंकि बच्चे योग्य एवं प्रतिभाशाली होंगे तथा स्वयं उन्नति करने में समर्थ होंगे साथ ही माता की अपेक्षा पिता के प्रति अधिक लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान पिता के माध्यम से ही करना पसंद करेंगे। इसके अतिरिक्त आपको बच्चों से आकांक्षाएं कम ही रखनी चाहिए तथा उन्हें स्वतन्त्र रूप से अपने मार्ग का चयन करने देना चाहिए। इससे आप दोनों संतुष्ट रहेंगे।

अध्ययन के प्रति प्रारंभ से ही बच्चों की रुचि रहेगी तथा स्वपरिश्रम, योग्यता एवं बुद्धिमता से शिक्षा के क्षेत्र में संतोष जनक प्रगति करने में समर्थ होंगे। उनमें व्यवहार कुशलता का भाव भी विद्यमान होगा जिससे अन्य सामाजिक जनों को प्रसन्न एवं प्रभावित करने में समर्थ होंगे। इससे आपकी सामाजिक प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप स्वयं भी गौरव की अनुभूति करेंगे। इसके अतिरिक्त बच्चे भी सुख दुख में आपका ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है तथा बुध भी सप्तम भाव में स्थित है। सामान्यतया वृश्चिक राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी पित प्रकृति व्ययशील एवं धनवान होता है परन्तु बुध के प्रभाव से वह बुद्धिमान कला प्रिय आस्तिक एवं सांसारिक कार्यों में निपुण रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी तेजस्वी बुद्धिमती एवं विदुषी महिला होंगी तथा संगीत एवं कला के प्रति उनके मन में पूर्ण रुचि रहेगी। सांसारिक कार्यों में वह निपुण होंगी एवं अपने उत्कृष्ट कार्य कलाओं से अन्य जनों को प्रभावित करेंगी। बुध के प्रभाव से वह एक आदर्श कर्तव्य परायण महिला होंगी तथा परिवार एवं अन्य संबंधियों के प्रति अपने कर्तव्य का ईमानदारी से पालन करेंगी।

आपकी पत्नी गौरवर्ण की सुंदर एवं आकर्षक महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा शारीरिक संरचना की दृष्टि से उनका आकर्षण बना रहेगा तथा अंग प्रत्यंग भी सुडौल एवं पुष्ट होंगे। अतः सुंदरता के साथ साथ उनका व्यक्तित्व भी अन्य जनों को प्रभावित करेगा। वह समय समय पर सौन्दर्य प्रसाधनों का भी उपयोग करेंगी एवं भौतिकता के प्रति उनका आकर्षण होगा तथा नवीन उपकरणों से वह घर को सुसज्जित रखेंगी।

आपका विवाह विज्ञापन द्वारा सम्पन्न होगा या आप स्वयं भी अपनी इच्छा से प्रेम विवाह कर सकते हैं विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। बुध के प्रभाव से एक दूसरे के प्रति प्रेम आकर्षण एवं समानता का भाव रहेगा तथा एक दूसरे की भावनाओं का पूर्ण आदर करेंगे इससे पारिवारिक शांति भी बनी रहेगी तथा जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह समृद्ध एवं अच्छे परिवार में होगा तथा सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से वे सुदृढ़ रहेंगे। विवाह के समय ससुराल से आपको प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी एवं बहुमूल्य उपकरण भी उपहार स्वरूप प्राप्त होगा। साथ ही विवाह के बाद भी आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। सास ससुर से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का पूर्ण सेवा सम्मान का भाव रहेगा एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी साथ ही अपनी मृदुवाणी से उन्हें प्रसन्न रखेंगी जिससे वे उनसे सन्तुष्ट रहेंगे। देवर एवं ननदों को भी वह अपने सद्व्यवहार से प्रसन्न रखेंगी एवं उनसे मातृवत स्नेह एवं वात्सल्य का भाव रखेंगी अतः वे भी उनसे पूर्ण प्रभावित होंगे तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं पर भी विचार विमर्श करेंगे। इस प्रकार एक दूसरे को पूर्ण सम्मान तथा सहयोग प्रदान करेंगे जिससे पारिवारिक सुख शांति में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहेगा।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ एवं अनुकूल रहेगी तथा इससे आपको वांछित लाभ एवं उन्नति होगी यदि आप मित्र या मातृपक्ष के संबंधियों से साझेदारी करें तो

इससे विशेष उन्नति एवं लाभ होगा ।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। कुम्भ राशि वायुतत्व युक्त है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र निरंतर उन्नतिशील रहेगा एवं किसी भी प्रकार की अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। साथ ही इच्छित उन्नति एवं सफलता भी मिलती रहेगी।

दशम भाव में कुंभ राशि का स्वामी शनि है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आपकी आजीविका उत्तम रहेगी। आपके लिए वायुसेना, एयर लाइंस, खनिज एवं खान विभाग, पेट्रोलियम उद्योगों में भागीदारी, फैक्टरी कर्मचारी, संदेशवाहक तथा राजनीति के क्षेत्र में विशिष्ट सफलता मिल सकती है। अतः यदि आप अपनी आजीविका इन्हीं क्षेत्रों में प्रारंभ करें तो इनमें आपको वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी तथा उन्नति के शिखर पर पहुँचने में आप समर्थ होंगे। साथ ही राजनीति आपके लिए काफी अनुकूल होगी तथा इस क्षेत्र में अल्प समय में ही आप काफी उन्नति करने में समर्थ हो सकते हैं। अतः आजीविका में वांछित सफलता एवं नवीन आयाम स्थापित करने के लिए आपको उपरोक्त क्षेत्रों या विभागों में ही अपना कार्य क्षेत्र निश्चित करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में लोहे के व्यापार से विशिष्ट लाभ प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही भारी उद्योग, फैक्टरी, पेट्रोल पम्प, शराब का व्यापार प्रेस, खेती, बागवानी, आदि के कार्यों से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में समर्थ होंगे तथा जीवन में विशिष्ट उन्नति तथा लाभ अर्जित करेंगे। अतः आपको चाहिए कि यत्नपूर्वक इन्हीं क्षेत्रों में अपने व्यापार का शुभारम्भ करें।

योगकारक ग्रह की राशि के प्रभाव से जीवन में आप उच्च मान सम्मान एवं पद अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आपको प्रचुर मात्रा में यश तथा प्रतिष्ठा की भी प्राप्ति होगी। आपका सम्पर्क अधिकारी एवं राजनैतिक नेताओं से बने रहेंगे जिससे सर्वत्र प्रभावशाली माने जाएंगे। साथ ही सामाजिक या सार्वजनिक संस्थाओं में भी आप उच्चपदाधिकारी के रूप में कार्यरत होंगे इनसे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा यश एवं प्रसिद्धि भी मिलेगी तथा आपका सामाजिक स्तर भी उच्च होगा।

आपके पिता तेजस्वी बुद्धिमान योग्य एवं पराक्रमी पुरुष होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा फलतः अन्य जन उनके कार्यकलापों से प्रभावित रहेंगे। आपके प्रति उनका विशेष स्नेह एवं वात्सल्य का भाव होगा तथा शिक्षा दीक्षा का समुचित ध्यान रखेंगे साथ ही आपके कार्यक्षेत्र में उन्नति में उनका विशेष योगदान रहेगा एवं उनके प्रभाव से भी आपको प्रचुर मात्रा में लाभ उन्नति एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना होगी तथा उनकी आज्ञा पालन करना अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। इसके अतिरिक्त परस्पर सिद्धांतों एवं वैचारिक एकता होने के कारण संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि दशम भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु एकादश भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि एकादश भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि का गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि द्वितीय भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी होकर 18 अक्टूबर को कर्क राशि तृतीय स्थान में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि द्वितीय भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे जिससे आपकी आय में वृद्धि होगी। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। कोई नया व्यापार शुरू करने के लिए अच्छा समय है। लग्न स्थान का गुरु नवीन विचार धारा तथा नयी योजनाओं को जन्म देगा जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं।

आपका भाग्य भी आपके साथ है। इसलिए कम समय में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। साझेदारी या शेयर बजार में आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है। मई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में वृद्धि होगी। एकादश स्थान के राहु अचानक धन लाभ कराते रहेंगे। आपको बड़े भाईयों से लाभ प्राप्त होता रहेगा। मई के बाद आपको रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आपके रुके हुए पैसे मिल सकते हैं। आप बचत करने में सफल रहेंगे।

मांगलिक कार्यों में आप खुले हाथों से खर्च करेंगे। निवेश के मामले में यह वर्ष अनुकूल रहेगा, और आप अच्छा निवेश भी करेंगे। अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। 14 मई के बाद अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से धन लाभ हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में सप्तम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी, जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

मई के बाद परिवार में सदस्य संख्या में बढ़ोत्तरी हो सकती है। आपको बड़े भाईयों

का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, जिससे समाज में आपके पराक्रम व प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। 30 मई के बाद चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध बहुत अच्छा रहेगा और आपको उनका सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का उपयुक्त समय है।

यदि आपकी सन्तान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय काफी अनुकूल है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में अच्छी सफलता प्राप्त होगी। आपके बच्चे इतने कामयाब होंगे कि आपको उन पर गर्व होगा।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके मन में हमेशा अच्छे विचार आएंगे। जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे एवं अपनी दिनचर्या भी अनुशासित रखेंगे।

यदि मौसम जनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय और अच्छा हो रहा है। उस समय आपको मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से अनुकूल है। यदि शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। पंचम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है।

14 मई के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्त होगी। जिन जातकों की नौकरी अभी तक नहीं लगी है, मई के बाद उन लोगों को नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा होगी।

द्वादश स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। मई के बाद आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। आप पूजा पाठ, यज्ञ एवं अनुष्ठान करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा। आप गुरु मन्त्र लेकर साधना कर सकते हैं। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे।

- स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके सामने नित्य घी का दीपक जलाएं।
- अपने मन को केन्द्रित करने के लिए ध्यान करें एवं नित्य प्रणायाम करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें नवम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें चतुर्थ भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने व्यवसाय में बेहतरसफलता प्राप्त करेंगे। आपकी सफलता में आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने व्यापार में कुछ नया करेंगे और आपको अच्छा लाभ होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान मिलेगा व अपने अधिकारियों की अनुकूलता प्राप्त होगी।

02 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको अपने कार्य क्षेत्र में बहुत अच्छा लाभ होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो उसमें भी इच्छित लाभ प्राप्त होगा। भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को 31 अक्टूबर के बाद अच्छा लाभ मिलेगा। इस समय के अंतराल में इच्छित स्थान पर आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत उत्तम रहेगा। आपके धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करके आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सकते हैं। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपको रत्न आभूषण इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पैतृक सम्पत्ति, या ससुराल से धन प्राप्त होने का प्रबल योग बन रहे हैं।

02 जून के बाद एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी आय के स्रोतों में बढोत्तरी होगी। इस समय अंतराल में आपको अचानक धन लाभ होगा। 31 अक्टूबर के बाद भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख भी प्राप्त हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना बनने के कारण सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको भाइयों का

पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थ स्थान का केतु आपके पारिवारिक माहौल को भंग करने की कोशिश करेगा, परन्तु आप अपने बुद्धि-विवेक से उसे भी अनुकूल कर लेंगे।

02 जून के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में बढ़ चढ़ के भाग लेंगे और सामाजिक उत्थान के लिए आप किसी संस्था का संचालन भी कर सकते हैं। समाज में आपका अपना एक अलग व्यक्तित्व होगा। 31 अक्टूबर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है उस समय आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण छा जाएगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। संतान के इच्छुक व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है।

02 जून से आपकी दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है। यदि आप का दुसरा बच्चा विवाह के योग्य है। तो विवाह हो जाएगा। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। आपकी शारीरिक ऊर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। शारीरिक अनुकूलता बनाये रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे। गुरु ग्रह की अनुकूलता के कारण शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आलस्य की भावना उत्पन्न कर सकती है। उस समय आपको परहेज की ज्यादा जरूरत होगी। खान-पान के साथ साथ आपको अपनी दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना चाहिए। सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करना चाहिए। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को बेहतर बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा, षष्ठ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षा में सबसे आगे रहेंगे। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार लाएंगे, सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको कार्यों में लाभ प्राप्त हो सकता है।

02 जून के बाद तकनीकी शिक्षा या व्यवसाय के लिए समय अच्छा हो रहा है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना बन रही है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में कोई विशेष यात्रा का योग नहीं बन रहा है, परन्तु 02 जून के बाद तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। धार्मिक यात्रा के लिए भी समय काफी अच्छा है।

31 अक्टूबर के बाद आप परिवार के साथ अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे या पर्यटन स्थल व दार्शनिक स्थलों की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शान्ति

धार्मिक कार्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। 2 जून के बाद नवम स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे। धार्मिक कार्य, गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन भी करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। 31 अक्टूबर के बाद अपने परिवार में सुख शान्ति या समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन व कोई धार्मिक कार्य भी संपन्न करेंगे।

- स्फटिक श्रीयन्त्र घर में स्थापित करें एवं उसके सामने नित्य दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दूर्वा चढ़ाएं एवं ॐ गं गणपतये नमः इस मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीस का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि एकादश भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं एकादश भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष नवम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ फलदायी रहेगा। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके कार्य व्यवसाय में अनुकूलता बनी रहेगा। बड़े अधिकारी या अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। व्यवसाय में कुछ विशेष वनया करने के अवसर भी मिलते रहेंगे परन्तु इस समय के अंतराल में व्यापार में विस्तार न करें। जितना आपसे हो सके उतना ही कार्य करें नहीं तो वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपसे नुकसान हो सकता है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ-साथ स्थान परिवर्तन भी हो सकता है।

03 जून के बाद शनि ग्रह का गोचर द्वादश भाव में हो रहा है। उस समय आपका कार्य व्यवसाय कुछ प्रभावित हो सकता है। आपके प्रतिद्वंदी आपका विरोध कर सकते हैं या शत्रुओं द्वारा आपके कार्य में रुकावट डालने की चेष्टा की जा सकती है। अतः बिना किसी पर विश्वास किये आत्मविश्वास के साथ कार्य करते रहें, क्योंकि 03 अक्टूबर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके सारे विरोधी शान्त होंगे और आपको कार्य-व्यवसाय में सफलता भी मिलेगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा रहेगा। एकादश स्थान केशनि धनागम में निरंतरता बनाए रखेंगे। व्यापारिक अनुकूलता के कारण आपकी आर्थिक स्थिति में वृद्धि हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। धनादि संचित करने में आपको भाईयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। निवेश के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ रहेगा। मांगलिक कार्यों में या समाजिक कार्यों में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

03 जून से 03 अक्टूबर के मध्य समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें या किसी को उधार पैसे न दें। कोई आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। 03 अक्टूबर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। वर्षान्त में गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में होगा, जिसके प्रभाव

से सट्टा लॉटरी या शेयर बजार से भी आप को धन लाभ हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

सामाजिक दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे। पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।

26 जून से चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से संबंध मधुर होंगे। 26 नवम्बर के बाद संतान पक्ष के लिए समय काफी अनुकूल हो रहा है।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी व्यवधान आ सकता है। सन्तान का लक्ष्य प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम भी मनचाहा परिणाम नहीं देगा परन्तु आपके दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य हैं तो विवाह निश्चित है।

जून के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 26 नवम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। संतान इच्छित दम्पतियों के लिए गर्भाधान का शुभसमय है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा परन्तु शनि ग्रह के गोचर के बाद आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

03 जून के बाद द्वादश स्थान में शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप बीमार हो सकते हैं। सुबह जल्दी उठ कर घूमना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 26 नवम्बर के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी, जिससे आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दूर हो जाएंगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। इन्जीनीयरिंग या हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

जून के बाद विद्यार्थियों का शिक्षा के प्रति रुझान बढ़ेगा। द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर अपने करियर में उन्नति करेंगे। 26 नवम्बर के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी अधिकांश यात्रा अचानक होंगी। पूर्व से निधारित यात्रा प्रायः निरस्त होंगी।

26जून के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा हो सकती है। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से अपनी दैनिक पूजा करते रहेंगे। जून के बाद द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आप दान पुण्य अधिक करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से तन्त्र, यन्त्र एवं मन्त्र के प्रति आप का विश्वास बढ़ेगा और चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें। (तांबे के लोटे में चावल डाल कर)
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और शनि मन्त्र का पाठ करें।
- संध्या के समय पीपल वृक्ष के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि एकादश भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं नवम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारंभ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा। कोई नया कार्य आरम्भ करेंगे और उसमें आपको सफलता भी मिलेगी। उच्च अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति भी हो सकती है। 28 फरवरी से 24 जुलाई तक समय प्रतिकूल हो रहा है। गुप्तशत्रु या विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में व्यवधान डाला जा सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप अपनी कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर व्यावसायिक जीवन की समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में अपने कर्मचारियों पर निगाह रखें।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष के प्रारम्भ में धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। नये व्यापार से भी शीघ्र लाभ होने के योग हैं। साथ ही फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय करेंगे। फरवरी से जून तक समय कुछ प्रभावित रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कुछ खर्च से आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। ऋण इत्यादि भी बढ़ सकता है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण सामान्य काम काज पर असर नहीं होगा। परन्तु आर्थिक कमी महसूस होती रहेगी। मांगलिक कार्य व पुत्रादि के विवाह अवसर पर भी धन का व्यय हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि आप विवाह योग्य हैं तो विवाह होने की सम्भावना है। प्रेम संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। 28 फरवरी के बाद मातुल पक्ष के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। माता के लिए समय शुभ रहेगा परन्तु पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा। पिता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

24 जुलाई के बाद समय अच्छा हो रहा है। नवविवाहिताओं को संतान की प्राप्ति हो

सकती है। पारिवारिक वातावरण अनुकूल बना रहेगा। यह समय बड़े भाई तथा मित्रों से लाभ का योग बना रहा है। घर के वातावरण में प्रेम, आपसी समन्वय व प्रसन्नता का संचार होगा। सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि के संकेत हैं।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपनी बुद्धि एवं विवेक के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। संतान की इच्छा रखने वाली महिलाओं के लिए गर्भ धारण का अच्छा समय है। परन्तु 28 फरवरी से 24 जुलाई तक समय प्रभावित रहेगा। ये समय आपके संतान की तरक्की में बाधक हो सकता है। दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

जुलाई के बाद आपके बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में भी वृद्धि होगी। आपको अपने बच्चों पर अभिमान होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अतिउत्तम रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। 23 फरवरी के बाद शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में शनि एवं राहु का गोचर एक साथ प्रतिकूल होने के कारण स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। पंचमस्थ गुरु शारीरिक आरोग्यता अनुकूल रखने का पूर्ण प्रयास करेंगे फिर भी चोट या दुर्घटना की स्थिति बन सकती है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। परन्तु 23 फरवरी के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। व्यावसायिक रूप से भी समय अच्छा नहीं रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी साथ ही नवमस्थ राहु पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचानक आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। 23 फरवरी के बाद विदेश यात्रा का भी योग बन रहा है। फरवरी के बाद चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से मनोवांछित स्थान पर स्थानांतरण होने के योग बन रहे हैं। आप अपनी जन्मभूमि की यात्रा करेंगे अथवा माता के निवास स्थल का भ्रमण करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में यात्रा के दौरान आपको छोटी-मोटी परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है क्योंकि राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा-पाठ यज्ञ अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति रुचि बढ़ेगी। फरवरी के बाद पारिवारिक सुख शान्ति के लिए भी आप अपने घर में हवन व कोई धार्मिक कार्य संपन्न करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप गुरु मन्त्र लेकर साधना भी कर सकते हैं। आप अपने से बड़े लोगों का सम्मान करेंगे।

- शनि मन्त्र का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का या काले कम्बल मजदूरों या गरीबों को दान करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन चिड़ियों को दाना डालें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय की स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यवसाय में हानि भी हो सकती है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आलस्य की भावना बनी रहेगी। गुप्त शत्रु एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। अष्टम स्थान का राहु अचानक आपके कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। 29 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण व्यापार में कुछ सुधार होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

05 अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु एवं लग्नस्थ शनि के प्रभाव से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आपको अपने आत्मविश्वास को बनाए रखना चाहिए और बिना किसी पर विश्वास किये अपना कार्य करते रहना चाहिए। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो इच्छित लाभ नहीं मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। शनि एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आय के स्रोत प्रभावित होंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में बहुत ज्यादा सुधार नहीं होगा। अष्टमस्थ राहु के कारण अचानक आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। 29 मार्च के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धन लाभ होगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है।

जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। आप किसी को उधार पैसा न दें वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं। शारीरिक बीमारी पर भी पैसा खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ मिला-जुला रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी जिससे परिवार में खुशी का वातावरण बनेगा परन्तु आपके

मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा। संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। सामाजिक उन्नति के लिए भी समय बहुत अच्छा नहीं है।

29 मार्च के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको बड़े भाईयों का सहयोग मिलेगा। 05 अक्टूबर के बाद पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं जिसका नकारात्मक प्रभाव आपके परिवार पर पड़ेगा। अतः उस समय के अंतराल में आपको अपने विवेक से काम लेना होगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। पंचम स्थान का मंगल गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात करा सकता है। बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है जिसके कारण आप मानसिक रूप से चिंतित रह सकते हैं। 29 मार्च के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। उनका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। आपकी संतान विवाह योग्य है तो उनका विवाह भी हो सकता है। दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान आ सकता है अतः मन को एकाग्र कर शिक्षा के प्रति ध्यान केन्द्रित करें। 05 अक्टूबर के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय ज्यादा खराब हो रहा है। उसके खान-पान पर विशेष ध्यान दें।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ से ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां होती रहेंगी। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। घी या तली हुई वस्तु का सेवन कम करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आप आलस्य व बीमारी जैसा अनुभव करेंगे। 29 मार्च के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा।

25 अगस्त के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल होने के कारण मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान रह सकते हैं। अष्टमस्थ राहु अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं। अतः अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए सुबह-सुबह व्यायाम या योगाभ्यास करना लाभप्रद रहेगा। शारीरिक व्याधि दूर करने के लिए अन्न दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिल सकती है परन्तु उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा नहीं है। द्वादशस्थ शनि के कारण पढ़ाई में आलस्य व शिक्षा में व्यवधान आता रहेगा परन्तु 29 मार्च के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से समय काफी अनुकूल होगा। व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय अच्छा रहेगा।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। 29 मार्च से 25 अगस्त तक आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। अगस्त के बाद से छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी।

यात्रा के दौरान या वाहन चलाते सावधानी बहुत जरूरी है, क्योंकि अष्टम स्थान का राहु दुर्घटना का योग बना रहा है। यात्रा के अंतराल में आपका सामान भी चोरी हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण वर्षारम्भ में पूजा-पाठ कम ही कर पाएंगे परन्तु दान पुण्य खूब करेंगे। भण्डारा करना या किसी गरीब की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। 29 मार्च के बाद मन्त्र जाप करेंगे। 05 अक्टूबर के बाद लग्न स्थान का शनि आपको बहुत ज्यादा आलसी बना सकता है जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित हो सकता है।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कम्बल गरीबों को दान करें। शनि मन्त्र का जाप करें।
- दुर्गा चालीसा का प्रत्येक दिन पाठ करें। दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions

